



# सार्व सृजन पटल

ई-न्यूज लैटर

लेखन और सृजन के उन्नयन के लिए सदैव प्रतिबद्ध

अंक-द्वितीय

सितम्बर-2024

पृष्ठ-16

निःशुल्क

## संयुक्त निदेशक उच्च शिक्षा प्रो.आनंद सिंह उनियाल ने किया 'सार्व सृजन पटल' न्यूज लैटर का विमोचन



संयुक्त निदेशक उच्च शिक्षा प्रो.आनंद सिंह उनियाल ने क्षेत्रीय कार्यालय में 'सार्व सृजन पटल' न्यूज लैटर के प्रवेशांक का विमोचन किया। अपने संबोधन में प्रो.उनियाल ने कहा कि सेवानिवृत्त प्राचार्य प्रो.तलवाड़ का यह प्रयास उनकी रचनात्मकता को उजागर करता है। न्यूज लैटर में शोध, युवा प्रतिभा, पहाड़ के व्यंजन, उत्तराखण्ड की परम्पराओं और विभिन्न आयामों को संकलित किया गया है। इसके माध्यम से प्रतिभाओं और उनके कार्यों को समाज के सम्मुख लाने का अवसर मिलेगा। सेवानिवृत्त प्राचार्य प्रो.जानकी पंवार ने कहा कि उत्तराखण्ड की अपनी एक समृद्ध विरासत है। न्यूज लैटर के माध्यम से आमजनमानस को इससे परिचित कराना एक सराहनीय प्रयास है। न्यूज लैटर के संपादक प्रो.के.एल.तलवाड़ ने कहा कि उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति, कला, रीति-रिवाजों, मेलों-उत्सवों और सफलता की कहानी लिख रहे युवाओं की जानकारी को इस मासिक न्यूज लैटर के माध्यम से समाज में साझा करने का प्रयास किया जा रहा है। विमोचन कार्यक्रम में उप निदेशक प्रो.ममता नैथानी, सहायक निदेशक डा.प्रमोद कुमार, दिलबर नेगी, उर्वशी जुयाल, महेंद्र बिष्ट, भूपेंद्र रावत, योगेश गिरि, सुभाष सिंह, महाबीर सिंह, गर्जेंद्र नेगी, अमित रावत व हेमंत हुरला आदि मौजूद रहे।

**उत्तराखण्ड राज्य उच्च शिक्षा उन्नयन समिति**  
**उत्तराखण्ड शासन** **डॉ. देवेन्द्र भर्तीन**  
उपाध्यक्ष **दिनांक: 15.09.2024**

**संदेश**

प्रिय प्रो. के.एल.तलवाड़,

यह जानकार प्रसन्नता हुई कि "सार्व सृजन पटल" न्यूज लैटर का दूसरा अंक प्रकाशित होने जा रहा है। आपके द्वारा प्रेषित न्यूज लैटर का प्रथम अंक देखा जो बहुत प्रभावशाली होने के साथ आपकी सृजनशीलता का भी परिचायक है। आप इस न्यूज लैटर में अनुभवी हस्ताक्षरों के साथ नव सृजनकर्ताओं को स्थान देने व प्रोत्साहित करने का जो कार्य कर रहे हैं, वह सराहनीय है। आपकी सृजनशीलता से मैं पहले से परिचित हूँ और प्रशंसक भी। आपने इस क्रम को बनाए रखने के साथ जो कार्य प्रारंभ किया है, उसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। आपने अपने इस नए प्रयोग में अनुभव व युवा चिंतन को एक साथ लाने का जो प्रयास किया है, वह ज्ञान, सृजन व सूचना के क्षेत्रों में समाज के लिए उपयोगी होगा। इससे युवाओं को प्रेरणा भी मिलेगी और अपने सृजन को प्रस्तुत करने का प्लेटफॉर्म भी।

मैं आपके इस सराहनीय सृजनात्मक कार्य की सफलता की कामना करता हूँ।

प्रो. देवेन्द्र भर्तीन  
उपाध्यक्ष

उत्तराखण्ड राज्य उच्च शिक्षा उन्नयन समिति, उत्तराखण्ड शासन





## सम्पादकीय



'साईं सृजन पटल' ई-न्यूज लैटर का द्वितीय अंक प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख है। प्रवेशांक के लिए आशा से अधिक सराहना और भरपूर स्नेह मिला। इसी के चलते असीम उत्साहवर्धन हुआ। द्वितीय अंक के लिए जहां माननीय उपाध्यक्ष, उत्तराखण्ड राज्य उच्च शिक्षा उन्नयन समिति उत्तराखण्ड सरकार डा. देवेन्द्र भसीन जी का शुभकामना संदेश मिला, तो वहीं मेरी गुरु रहीं डा. निशा जैन जी ने नीदरलैंड से अपना आशीर्वाद भेजा है। इस अंक में सफलता की कहानी के रूप में डा. हर्षवंती बिष्ट जी का पर्यावरण संरक्षण और स्वैच्छिक रक्तदान की मिसाल पेश करने वाले संयुक्त निदेशक उच्च शिक्षा डा. आनन्द सिंह उनियाल जी के कार्य भी पाठकों की नज़र हैं। मेरे विद्यार्थी सुनील थपलियाल व विजयलक्ष्मी बिजल्वाण जोशी का संघर्ष और अंजलि थापा मैडम, अजय कुमार, साहिबा मंसूरी, शिल्पी कुकरेती के साथ ही रिंगाल शिल्पी राजेन्द्र बड़वाल की कला से भी पाठक रु-ब-रु होंगे। उत्तराखण्ड की अपनी धरोहर 'औखां' भी इस अंक में समाहित हैं। पर्यटन स्थल नचिकेता ताल की सैर के साथ ही डा. शोभा रावत ने उत्तराखण्डी पकवान 'अरसे' की मिठास घोलने का प्रयास भी किया गया है।

सह संपादक की भूमिका में अंकित तिवारी भी अपना कर्तव्यनिर्वहन जिम्मेदारी से कर रहे हैं। पाठकों से सादर आग्रह है कि जिन प्रतिभाओं के कार्यों को आप समाज के सम्मुख लाने की आवश्यकता समझते हैं, हमें अवश्य बतायें। हो सकता है कि उनके उत्साहवर्धन से उन्हें और निखार मिले। न्यूज लैटर पर आपकी हर तरह की प्रतिक्रिया का सदैव स्वागत रहेगा।

**आपका- डा.के.एल.तलवाड़**

न्यूज लैटर में प्रकाशित लेखों में तथ्यों सम्बन्धी विचार लेखकों के निजी हैं।

• 14 सितम्बर  
हिंदी दिवस पर विशेष

## राष्ट्र के गौरव 'हिंदी' का समावेशी और वैज्ञानिक स्फूर्ति

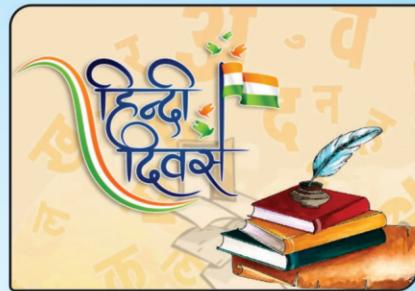
भाषा, विचारों और भावों को व्यक्त करने का साधन है। भाषा ही वह माध्यम है जिसके जरिये सूचनाएं एवं संदेश यात्रा करते हैं। हिंदी, दुनिया में तीसरी सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा है। इसका वैज्ञानिक स्वरूप के साथ समावेशी होना इसे अद्वितीय बनाता है। हिंदी एक जनतांत्रिक भाषा है जिसमें उदारता और स्वीकार्यता का भाव है। हिंदी की सरलता इस तथ्य में समाहित है कि इसने दुनिया के विभिन्न भाषाएँ के शब्दों को आत्मसात कर अपना लिया है। खुली बाहों वाली भाषा के साथ-साथ हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है। इसके वर्णों को बोलने की व्यवस्था एवं उनका वर्गीकरण इसे वैज्ञानिक भाषा बनाते हैं। जिन वर्णों के उच्चारण के समय ध्वनि कंठ से निकलती है, उन्हें कंठव्य (क, ख, ग, घ, ङ), जीभ तालू से लगती है, उन्हें तालव्य (च, छ, ज, झ, झ), जीभ मुर्धा से लगती है, उन्हें मूर्धन्य (ट, ठ, ड, ण), जीभ दांतों से लगती है, उन्हें दंतीय (त, थ, द, ध, न), होठ मिलते हैं, उन्हें ओष्ठ्य (प, फ, ब, म), ध्वनि अंदर से निकलती है, उन्हें अंतस्थ (य, र, ल, व) एवं अंदर से गर्म ऊष्मा निकलती है, उन्हें ऊष्मा (श, ष, स, ह) कहते हैं। हिंदी हमारे राष्ट्र का गौरव है जिसने स्वातंत्र्य समर में भी बढ़-चढ़कर योगदान दिया। एक स्वाभिमानी राष्ट्र के लिए स्वभाषा का होना नितांत आवश्यक है। औपनिवेशिक दासता की मानसिकता से मुक्ति के लिए शिक्षा, न्याय-प्रणाली और शासन-प्रशासन से अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना होगा। हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ाने के प्रयास द्वारा ही इसे राजभाषा से राष्ट्रभाषा में परिवर्तित किया जा सकेगा।



**प्रस्तुति:** डॉ० दिनेश कुमार पाण्डे  
आसिस्टेंट प्रोफेसर (वनस्पति विज्ञान),  
डॉ० शिवानंद नौरियाल राजकीय राजनीतिकोशल  
महाविद्यालय, कर्णप्रियान (चमोली)



2



24 सितम्बर

राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रो. (डा.) के.एल. तलवाड़

(पूर्व जिला समन्वयक एनएसएस व सेवानिवृत्त प्राचारी)

# उत्तराखण्ड में स्वैच्छिक रक्तदान की मिसाल बन चुके प्रो.आनंद सिंह उनियाल 28 वर्षों से लगातार करते आ रहे स्वैच्छिक रक्तदान, अब तक 139 बार कर चुके हैं



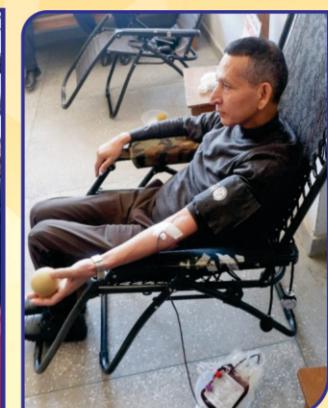
राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी, जिला समन्वयक, राज्य समन्वयक के बाद स्नातक प्राचार्य और उपनिदेशक उच्च शिक्षा जैसे पदों पर कार्यरत कर चुके प्रो. आनंद सिंह उनियाल के पास वर्तमान में संयुक्त निदेशक उच्च शिक्षा, नोडल अधिकारी रुसा तथा शुल्क एवं नियामक समिति के महत्वपूर्ण दायित्व हैं। अपनी कुशल प्रशासनिक क्षमता और सौम्य व्यवहार के साथ ही इनमें समाजसेवा का सच्चा भाव समाहित है।

प्रो. उनियाल को एक दुर्घटना में अस्पताल में भर्ती एक युवती की मदद से रक्तदान करने की प्रेरणा मिली। वे विगत 28 वर्षों से लगातार स्वैच्छिक रक्तदान करते आ रहे हैं। अबतक वे 139 बार रक्तदान कर कई लोगों को नया जीवन दे चुके हैं। बकौल प्रो. उनियाल जब वह हल्द्वानी पीजी कालेज में शिक्षक थे तो पहली बार उन्हें एक दुर्घटना में अस्पताल में भर्ती एक युवती के परिजन खून के लिए भटकते मिले। जब उन्हें हर जगह से निराशा हाथ लगी तो प्रो. उनियाल ने अस्पताल पहुंचकर स्वयं रक्तदान की पहल की।

इसके बाद 61 वर्षीय प्रो. उनियाल का स्वैच्छिक रक्तदान का सिलसिला बदस्तूर जारी है। अभी तक वे नौ लाख से अधिक लोगों को भी रक्तदान करवा चुके हैं। कोविड काल में ही उन्होंने लगभग 400 लोगों से रक्तदान करवाया। मुझसे भी पहली बार बड़कोट कालेज में वर्ष 2009 में रक्तदान करवा कर मेरा डर दूर किया। इसी वर्ष फरवरी माह में अपनी पत्नी के असमय निधन के बाद भी वे टूटे नहीं और रक्तदान और जनहित के कार्यों से सदैव जुड़े रहते हैं।

## प्रो.उनियाल को निले सम्मान/पुरस्कार

- स्वामी विवेकानंद एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी पुरस्कार
- 2005 स्वामी विवेकानंद एनएसएस पुरस्कार, जनपद समन्वयक 2007
- कामनवेत्थ यूथ सिल्वर अवार्ड 2007–08
- निर्वाचन आयोग भारत सरकार द्वारा सम्मानित
- उत्तराखण्ड प्रतिभा सम्मान
- राज्य रक्त संचरण परिषद एवं एड्स कंट्रोल सोसाइटी द्वारा सम्मानित
- अमर उजाला दैनिक समाचार पत्र द्वारा शिक्षक सम्मान 2007
- आई.एम.ए. ब्लड बैंक के ब्रांड एम्बेसेडर रहे।



“उत्तराखण्ड प्राकृतिक आपदाओं और सड़क दुर्घटनाओं की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील राज्य है। ऐसे में घायलों के उपचार हेतु रक्त की आवश्यकता हर समय रहती है। मानव रक्त का कोई विकल्प नहीं है।

- प्रो.ए.एस.उनियाल

प्रस्तुति: डा.के.एल.तलवाड़ व

उर्वशी जुयाल (क्षेत्रीय कार्यालय)





## डा.वेणीराम अन्थवाल की 'एशिया बुक ऑफ रिकार्ड्स' से सम्मानित पुरस्तक 'उत्तराखण्ड के लोक-जीवन की समृद्ध परंपरा- औखांण' से साभार

### ► जु रलू जेठ स्यलू, सु पडलू असूज भ्यलू

(जो ज्येष्ठ छांव में रहेगा वह आशवीन परेशान रहेगा)

अर्थात् जो परिश्रम से बचने का प्रयास करेगा उसे सफलता प्राप्त नहीं हो सकती या समय का सदुपयोग न करने वाला बाद में पछताता है।

### ► आज,आज, भौल,भौल दिन गैन सौल सौल

(आज कल कहते—कहते,सोलह दिन गुजर गये)

अर्थात् किसी कार्य को करने में समय व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए, जो आज करना है वह अभी करना चाहिए।

### ► नि करदु बल सत्यनारैणौ कथा अर अपणं बै बावुक करदु लता

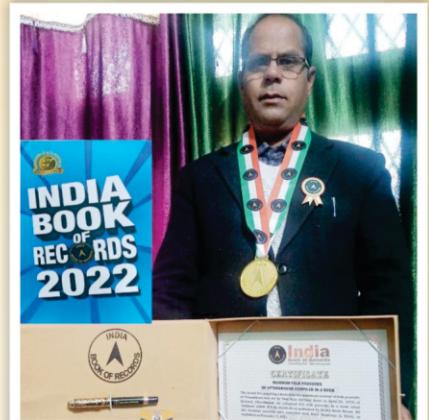
(सत्यनारायण की पूजा नहीं करता और माता—पिता की सेवा करता)

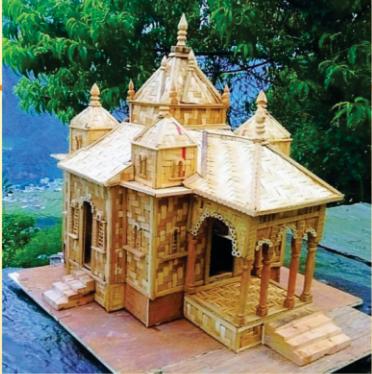
अर्थात् मानव सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है या धर्म पालन में दिखावा नहीं करना चाहिए।

### ► भिंडी खांणक बल ज्वगी हवै अर पैल्या बासा भुखु रै

(ज्यादा खाने को साधु हुआ और पहले दिन भूखा रहा)

अर्थात् बिना परिश्रम के कोई वस्तु प्राप्त नहीं होती है या दूसरों की दौलत देखकर लालच नहीं करना चाहिए या कि कार्य को आरंभ करते ही मुसीबत आना।





# हस्तशिल्प की विरासत को आगे बढ़ा रहे राजेन्द्र बड़वाल

जब इरादे और हौसले मजबूत हों तो सफलता और चमोली जनपद के किरली गांव के राजेन्द्र बड़वाल की। रिंगाल से अपनी हस्तकला शुरू कर राजेन्द्र बड़वाल ने उत्तराखण्ड का राज्य पक्षी मोनाल, राज्य पुष्प ब्रह्मकमल, रिंगाल कूड़ादान, लालटेन, रिंगाल ढोल दमांऊ सहित 250 से अधिक कलाकृति बनाकर सभी का ध्यान उत्तराखण्ड की इस पौराणिक विरासत की ओर खींचा है।

41 वर्षीय राजेन्द्र बड़वाल बताते हैं कि हिन्दी और संस्कृत में स्नातकोत्तर की पढ़ाई करने के उपरान्त मैंने बी.एड. की पढ़ाई की और वर्तमान समय में वे राजकीय इंटर कॉलेज गणाई मोल्टा(चमोली) में प्रवक्ता हिन्दी (अतिथि शिक्षक) पद पर कार्यरत हैं। पेशे से शिक्षक होने के बावजूद उन्होंने हस्तशिल्प का कार्य नहीं छोड़ा तथा इस विरासत को जन-जन तक पहुंचाने का सपना भी पाला है। रिंगाल की हस्तशिल्प कलाकृति उत्तराखण्ड की बहुत पुरानी विरासत है परन्तु आज यह विलुप्ति की कगार पर है यदि इसे सृजनशीलता के साथ नए कलेवर में जनमानस के सामने प्रस्तुत किया जाय तो इस विलुप्ति होती विरासत को बचाया जा सकता है। चमोली बाजार से 10 किमी. बद्रीनाथ मार्ग पर छोटा स्टेशन है गडोरा। यहां से 7 किमी. स्थानीय सड़क मार्ग पर स्थित है किरली गांव। इसी गांव में पले-बढ़े राजेन्द्र बड़वाल 15 वर्ष की अवस्था से रिंगाल के हस्तशिल्प का कार्य कर रहे हैं। अपने दादा जी कंचनी लाल तथा पिताजी दरमानी बड़वाल से विरासत में सीखी इस कला को वे पिछले 25 साल से कर रहे हैं। वे कहते हैं कि उन्होंने अभी तक लालटेन, टोकरी, लैम्प, ढोल दमांऊ, हुड़का, मन्दिर, छांतोली, पेट्रोमैक्स, मोर, मोनाल, ब्रह्मकमल, पेन स्टैंड, कूड़ादान, रामचन्द्र की मूर्ति आदि कलाकृति सहित 250 से अधिक उत्पाद तैयार किए हैं। इन उत्पादों को वे बाजार में "आर.डी. पहाड़ी हस्तशिल्प" के नाम से बेचते हैं। बड़वाल बाताते हैं कि इस कार्य के लिए उन्होंने कहीं से कोई प्रशिक्षण नहीं लिया है। आज उन्होंने केवल प्रदेश में बल्कि उत्तराखण्ड से बाहर भी इस हस्तशिल्प का प्रशिक्षण देने के लिए बुलाया जाता है। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान गौचर, टिहरी, पौड़ी, देहरादून, हिमाचल प्रदेश, मुम्बई आदि स्थानों पर वे अभी तक इस कला का प्रशिक्षण दे चुके हैं। सरकार और कई स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से कई बार यह आश्वासन मिलता है कि आपकी कला को संरक्षण दिया जायेगा लेकिन वर्तमान समय तक अभी कोई ऐसी मदद नहीं मिली है। वे कहते हैं कि किसी भी कार्य को करने के लिए मन में कुछ विचार बनाना आवश्यक है। मैंने भी सबसे पहले मन में विचार बनाया कि क्या रिंगाल से लालटेन बन सकती है? जब व्यावहारिकता में उसे मूर्त रूप दिया तो यह एक नई सृजनशीलता लगी और यहीं से यह कार्य निरन्तर आगे बढ़ा। इस कलाकृति का मुख्य कच्चा श्रोत रिंगाल है जिसे जितना काटो वह उतना ही और फैलता जाता है साथ ही इसके उत्पाद पर्यावरण मित्र होकर पर्यावरण और सतत विकास को संरक्षण प्रदान करते हैं। यह

प्रयास विलुप्त होती इस विरासत को बचाने का भी है। यदि हम नई पीढ़ी के सामने इसे नए रूप में प्रस्तुत करते हैं तो आने वाली पीढ़ी भी इसे बचाने और बढ़ाने का प्रयास करेगी।



**प्रस्तुति:** कीर्तिराम डंगवाल, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान  
**डा. शिवानन्द नौटियाल**

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रियाग, चमोली

# डा. हर्षवन्ती बिष्ट द्वारा भोजबासा में रोपे गये पौधे अब भोजवृक्ष बनकर लहलहा रहे



भारतीय एवरेस्ट अभियान दल (1984) की सदस्य तथा अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित पर्यावरणविद् डा. हर्षवन्ती बिष्ट गंगोत्री-गोमुख क्षेत्र में भोजबासा नामक स्थान पर भोज विहीन हो चुके कठिन भू-भाग में वनीकरण कर पर्यावरण संरक्षण का एक सकारात्मक संदेश देने में सफल रही हैं। हालांकि यह कार्य इतना आसान नहीं था। डा. बिष्ट बताती हैं कि “वर्ष 1984 में जब मैंने सोचा था कि पर्वतारोहण से हटकर कुछ नया करना चाहिए तो मैं गंगोत्री-गोमुख क्षेत्र गई थी, यूं तो पहले भी कई बार इस इलाके में गई थी पर पहली बार मुझे लगा कि यहां काम करने की गुंजाइश है। मैंने लौटकर पर्यावरण एवं वन मंत्रालय भारत सरकार को





गंगोत्री—गोमुख क्षेत्र में पर्यटन व तीर्थाटन के प्रभाव के अध्ययन हेतु एक परियोजना प्रेषित की जो संयोग से स्वीकृत भी हो गई। मैंने इस अध्ययन के दौरान पाया कि इससे स्थानीय लोगों को आर्थिक लाभ, रोजगार सृजन एवं अतिरिक्त आय प्राप्त हो रही है, पर पेड़ कटने व कचरे के ढेर बढ़ने से पर्यावरण को नुकसान होना शुरू हो गया है। बस इसी से मुझे यहाँ पेड़ लगाने की प्रेरणा मिली। चूंकि इस क्षेत्र में भोज के ही पेड़ होते हैं अतः मैंने भोज का वृक्षारोपण करने की ठानी, यद्यपि स्थानीय पंडों की यह बात कि 'भोज देववृक्ष है, इसे कोई उगा नहीं सकता' ने शुरू में मुझे थोड़ा हतोत्साहित किया पर फिर दुगनी ताकत से काम करने के लिए प्रेरित भी किया।

भोज पौधशाला बनी और फिर वृक्षारोपण भी हुआ। केवल



पेड़ लगाने और फोटो खिंचवाने की रस्म अदायगी ही नहीं हुई। आज यह भोजवृक्ष 15–20 फुट ऊंचे हैं। जीवन प्रत्याशा (Survival Rate) 50 प्रतिशत है, मैं बहुत प्रसन्न हूँ।

दुःख इस बात का है कि इस पूरे काम में स्थानीय वन विभाग ने मेरे ऊपर झूठा आपराधिक मुकदमा किया। यदि क्षेत्र में काम कर रहे मेरे श्रमिकों ने कोई अपराध किया था तो दोषी वह थे, पर मुझपर और रतन सिंह चौहान जी पर भी दोषारोपण कर अपराधी बनाया गया। हम भारतीय न्यायपालिका में विश्वास रखने वाले हैं और हम आभारी हैं कि हमें न्याय मिला और हम बाइज्जत बरी हुए। तत्कालीन अपर प्रमुख वन संरक्षक (वन्य जीव), मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक उत्तराखण्ड ने 2006 में मुझे लिखा कि आप वनीकरण की देखरेख हेतु किसी को न भेजें, वन विभाग द्वारा देखरेख कर ली जाएगी। एक पत्र में उन्होंने यहाँ तक लिखा कि यह इलाका एल्पाइन स्क्रब क्षेत्र है। यहाँ पेड़ नहीं उगते अतः पेड़ न लगाएं। यह तो हमारे माननीय पूर्व मुख्यमंत्रियों (लेपिटनेंट जनरल भुवन चन्द्र खंडूरी जी व श्री हरीश रावत जी) का सहयोग रहा कि उन्होंने इस कार्य हेतु मुझे वन विभाग से अनुमति दिलाई और यह कार्य मैं कर पाई। तत्कालीन वन विभाग के कुछ अधिकारियों का रवैया नकारात्मक था, पर उसने मुझे मजबूत किया, इसलिए सही मायनों में उनकी आभारी हूँ। इस कार्य में उत्तराखण्ड सेवा निधि अल्मोड़ा, जी.बी.पन्त इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन एन्वायरमेंट कोसी अल्मोड़ा, नेहरू पर्वतारोहण संस्थान उत्तरकाशी, फॉरेस्ट डिपार्टमेंट के कुछ अधिकारियों, नेपाली श्रमिकों ने बहुत सहयोग दिया। श्री रतन सिंह चौहान जी की आभारी हूँ उनके सहयोग के बिना यह कार्य संभव न होता।

**प्रस्तुति: अंकित तिवारी (सह संपादक)**





# विजय लक्ष्मी जोशी: नौगांव विकासखंड की दिव्यांग बच्चों की शिक्षाविद्

## परिचय

उत्तराखण्ड के जनपद उत्तरकाशी के नौगांव विकासखंड के तुनाल्का गांव की निवासी विजय लक्ष्मी जोशी एक समर्पित शिक्षाविद हैं। उनकी शिक्षा और सामाजिक सेवाओं के क्षेत्र में विशेष भूमिका ने उन्हें एक प्रेरणास्त्रोत बना दिया है। 2007 में, उन्होंने दिव्यांग बच्चों के लिए तुनाल्का गांव में एक विशेष स्कूल की स्थापना की, जिससे उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू उजागर हुआ। यह विद्यालय न केवल उनके व्यक्तिगत समर्पण का प्रमाण है, बल्कि पहाड़ी क्षेत्रों में दिव्यांग बच्चों के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है।

## दिव्यांग बच्चों के लिए स्कूल खोलने की प्रेरणा:

विजय लक्ष्मी जोशी की प्रेरणा का स्रोत उनके विद्यालय की एक दिव्यांग छात्रा थी, जिसकी कठिनाइयों ने उन्हें गहराई से प्रभावित किया। उस छात्रा की समस्याओं को देख कर, उन्होंने महसूस किया कि पहाड़ी क्षेत्रों में दिव्यांग बच्चों के लिए कोई समर्पित और विशेष विद्यालय नहीं था। इस कमी को पूरा करने के लिए विजय लक्ष्मी जोशी ने ठान लिया कि वे दिव्यांग बच्चों के लिए एसा स्कूल स्थापित करें जो न केवल उनकी शिक्षा की जरूरतों को पूरा कर सके, बल्कि उन्हें सामाजिक और मानसिक समर्थन भी प्रदान कर सके।

## विद्यालय की स्थापना:

विजय पब्लिक स्कूल की स्थापना वर्ष 2000 में सामान्य बच्चों से की थी तथा वर्ष 2007 में सामान्य बच्चों के साथ दृष्टि दिव्यांग बच्चों को शामिल किया। विद्यालय की स्थापना के लिए विजय लक्ष्मी विजल्वाण जोशी ने क्षेत्र में व्यापक सर्वेक्षण किया और



विभिन्न सामाजिक वर्गों से समर्थन जुटाया। उनके पिता, श्री भगतराम विजल्वाण जी ने विद्यालय के लिए भूमि दान की, जिससे विद्यालय की आधारशिला रखी गई। जिसमें 3 कमरों का निर्माण पिताजी भगत राम विजल्वाण जी तथा 2 कमरों का निर्माण बड़े भाई श्रीमान आनन्द विजल्वाण जी द्वारा किया गया है हालांकि निर्माण के लिए आवश्यक धन की कमी का सामना करना पड़ा, लेकिन समाज के कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने मदद की। पूर्व विधायक श्री केदार सिंह रावत और पूर्व न्यायाधीश श्रीमान इंद्रजीत मल्होत्रा ने विद्यालय के दो-दो कमरों का निर्माण करवाया। NFB दिल्ली द्वारा दो अतिरिक्त कमरों का निर्माण हुआ। राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांग जन सशक्तिकरण संस्थान देहरादून की डायरेक्टर श्रीमती अनुराधा डालमिया के सहयोग से विद्यालय की स्थापना पूरी हुई और दिव्यांग बच्चों को इसमें प्रवेश मिला। माता पिता और भाई बहिनों का अपने सहयोगियों के सहयोग से





आगे बढ़ने की हिम्मत मिली है।

### दिव्यांग बच्चों के लिए आवासीय सुविधा

2007 में विद्यालय ने दिव्यांग बच्चों के लिए निःशुल्क आवासीय सुविधा प्रदान की, जिसमें प्रारंभ में 12 बच्चों को स्थान मिला। वर्तमान में, विद्यालय में 35 दिव्यांग बच्चे आवासीय सुविधा का लाभ ले रहे हैं। इस सुविधा ने बच्चों को न केवल उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान की, बल्कि उन्हें एक सुरक्षित और सहायक वातावरण भी उपलब्ध कराया। आवासीय सुविधा ने बच्चों को उनके परिवारों से दूर होने के बावजूद आवश्यक देखभाल और समर्थन सुनिश्चित किया।

### वित्तीय कठिनाइयाँ और संघर्ष

मार्च 2021 तक, राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांग जन सशक्तिकरण संस्थान, देहरादून से विद्यालय को अनुदान प्राप्त होता था। हालांकि, इस संस्थान के बंद होने के बाद विद्यालय को वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। विजय लक्ष्मी विजल्वाण जोशी ने इन चुनौतियों का सामना करते हुए तीन साल तक व्यक्तिगत कर्ज लेकर विद्यालय का संचालन जारी रखा। उन्होंने अपने संपूर्ण समर्पण और प्रयास से यह सुनिश्चित किया कि बच्चों की शिक्षा और अन्य आवश्यकताएँ प्रभावित न हों।

### पति का योगदान

विजय लक्ष्मी विजल्वाण जोशी के इस संघर्ष में उनके पति श्री वीरेंद्र दत्त जोशी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। श्री वीरेंद्र दत्त जोशी ने न केवल प्रशासनिक और वित्तीय चुनौतियों का सामना किया, बल्कि समाज में जागरूकता लाने और विद्यालय के समर्थन में समुदाय को जुटाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका लगातार समर्थन और प्रोत्साहन विजय लक्ष्मी विजल्वाण जोशी के मिशन को सशक्त बनाने में सहायक रहा।

### वित्तीय प्रबंधन और अतिरिक्त योगदान

मार्च 2021 से अप्रैल 2023 तक, विजय लक्ष्मी विजल्वाण जोशी ने जिला दिव्यांग पुनर्वास केंद्र के प्रबंधक के रूप में कार्य किया।

इस दौरान, उन्होंने दिव्यांग जनों के UDID कार्ड बनवाने और उनकी समस्याओं के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके प्रयासों से स्थानीय दिव्यांग जनों को आवश्यक प्रमाण पत्र और समर्थन प्राप्त हुआ, जिससे उनकी सामाजिक और कानूनी पहचान मजबूत हुई।

### मान्यता और पुरस्कार

विजय लक्ष्मी विजल्वाण जोशी को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए कई सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा सम्मानित किया गया है। इनमें हाइलैंडर पुरस्कार, शैल श्री पुरस्कार और अन्य सम्मान शामिल हैं, जो उनके समर्पण और प्रयासों की मान्यता हैं। इन पुरस्कारों ने उनके कार्यों को सार्वजनिक पहचान दी और उन्हें समाज में एक प्रेरणास्त्रोत के रूप में स्थापित किया।

### नया अध्याय: 2024 से वर्तमान तक

2024 में, पूज्य महाराज चिदानंद मुनि सरस्वती ने विद्यालय की जिम्मेदारी संभाल ली। उनके मार्गदर्शन में विद्यालय को नई दिशा और ऊर्जा प्राप्त हुई है। इस नए अध्याय में, विद्यालय ने अपने संसाधनों को और भी बेहतर बनाने का प्रयास किया है, जिससे बच्चों को उन्नत शिक्षा और विकास के अवसर मिल सके।

### उत्कृष्टता के उदाहरण

इस विद्यालय के कई पूर्व छात्र आज सरकारी सेवाओं में कार्यरत हैं और खेल के क्षेत्र में भी देश का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है, जिससे विद्यालय और क्षेत्र का नाम रोशन हुआ है। इन उपलब्धियों ने यह साबित किया है कि दिव्यांग बच्चों को सक्षम और आत्मनिर्भर बनने के सभी अवसर मिल सकते हैं।

### निष्कर्ष

विजय लक्ष्मी विजल्वाण जोशी के समर्पण और पूज्य महाराज चिदानंद मुनि सरस्वती के संरक्षण ने उत्तराखण्ड के पहाड़ी क्षेत्रों में दिव्यांग बच्चों को शिक्षा का अधिकार दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। श्री वीरेंद्र दत्त जोशी के सहयोग ने इस मिशन को और भी सशक्त बनाया है। विजय लक्ष्मी विजल्वाण जोशी की प्रेरणा और दृढ़ संकल्प ने समाज में सकारात्मक बदलाव लाया है। उनका विद्यालय शिक्षा और सशक्तिकरण के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा, और दिव्यांग बच्चों के जीवन में एक महत्वपूर्ण अंतर लाता रहेगा।

**“** मुझे इस बात का गर्व है कि विजय लक्ष्मी जोशी बड़कोट महाविद्यालय में वर्ष 1995 से 1998 तक डा. के.एल. तलवाड़ जी की एक आदर्श शिष्या रही है।

**प्रस्तुति:** श्रीमती नीलम तलवाड़



# सुनील थपलियाल ने उत्तराखण्ड में जिम्मेदार पत्रकार के रूप में बनाई एक अलग पहचान



सुनील थपलियाल

शैक्षणिक सत्र 1995–96 में राजकीय महाविद्यालय बड़कोट (उत्तरकाशी) में अपने एक विद्यार्थी के कार्यों ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा। इंटरमीडिएट के बाद सुनील थपलियाल नाम का वह विद्यार्थी नवरथापित महाविद्यालय में प्रवेश लेकर अति उत्साही था। मैंने एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारी रहते हुए यह पाया कि सुनील के अंदर कर्मठता और सेवा का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है और इसी के चलते वह एनएसएस के दस दिवसीय विशेष शिविर में सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवी भी चुना गया। आगे छात्र राजनीति में आकर वह छात्रसंघ महासचिव और अध्यक्ष भी बना। छात्रसंघ अध्यक्ष रहते हुए उसे कालेज हित के आंदोलन में पांच दिनों के लिए टिहरी जेल भी जाना पड़ा, हालांकि ढाई साल बाद मामले में बाइज्जत बरी भी हो गया। महाविद्यालय को पुस्तकालय और फर्नीचर के लिए जिलाधिकारी उत्तरकाशी से दो लाख रुपये दिलवाने में सफल रहा। बीएड इन्ट्रेंस परीक्षा केंद्र और एमए व्यक्तिगत परीक्षा केंद्र बनाने लिए विश्वविद्यालय से विशेष आग्रह किया और सफलता भी पाई। ग्रेजुएशन के बाद सुनील ने अपनी रुचि के क्षेत्र में हाथ आजमाने के लिए मुबई का रुख किया। वहीं पत्रकारिता की डिग्री के साथ-साथ डेढ़ वर्ष तक दैनिक समाचार पत्र आजाद चिंगारी, मासिक पत्रिका समाइ इंफॉर्मेशन और मुबई न्यूज चैनल में काम किया। उत्तराखण्ड से लगाव के चलते अगले ढाई वर्षों तक देहरादून में वरिष्ठ पत्रकार श्री हर्षवर्धन बहुगुणा के साथ उत्तराखण्ड खबर-सार न्यूज चैनल में काम किया। फिर दैनिक

समाचार पत्र बद्री विशाल, शाह टाइम्स, सीमांत वार्ता व राष्ट्रीय सहारा में संवाददाता के रूप में कार्य किया।

राजकीय महाविद्यालय पुरोला में पांच वर्षों तक मास कॉम में अध्यापन कार्य भी किया। केंद्रीय विद्यालय व स्थानीय विद्यालयों में पत्रकारिता के क्षेत्र में करिअर काउंसिलिंग करते रहे। वर्तमान में दैनिक समाचार पत्र राष्ट्रीय सहारा और सहारा समय न्यूज चैनल में कार्य कर रहे हैं। साथ ही साप्ताहिक यमुनोत्री एक्सप्रेस पंजीकृत अखबार, सूचीबद्ध न्यूज पोर्टल यमुनोत्री एक्सप्रेस और यूट्यूब चैनल संचालित कर रहे हैं।



साथ ही पत्रकारिता के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण दायित्व भी निभा रहे हैं यथा अध्यक्ष यमुनोत्री प्रेस क्लब, अध्यक्ष रंवाई घाटी पत्रकार संघ, अध्यक्ष जिला पत्रकार संघ, सचिव स्टेट प्रेस क्लब उत्तराखण्ड, सचिव स्टेट यूनियन ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट एसोसिएशन में प्रदेश उपाध्यक्ष हैं। इंडियन फेडरेशन ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट (IFWJ) नई दिल्ली में कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी भी निभा रहे हैं। इसे कहते हैं 'जहां चाह, वहां राह'। हमें गर्व है कि हमारे विद्यार्थी रहे सुनील थपलियाल ने पत्रकारिता को जनसेवा का एक माध्यम बनाया है। समाज सेवा से जुड़े इनके कार्यों फेहरिस्त बहुत लंबी है जिसकी विस्तृत चर्चा अगले अंक में होगी।

प्रस्तुति: प्रो. (डा.) के.एल. तलवाड़





# नचिकेता ताल : जनपद उत्तरकाशी और टिहरी की सीमा पर स्थित मनमोहक ताल

गढ़वाल हिमालय अपने दिव्य पावन मंदिरों और उनमें विराजित विभिन्न देव प्रतिमाओं, मनमोहक झीलों जिन्हें स्थानीय लोग ताल कहकर पुकारते हैं, विभिन्न फूल घाटियों, बुग्यालों, पयारों, हिमानियों और चित्तार्कर्षक झरनों के लिए जगतविख्यात है। जिनके दर्शन करने के लिए देश के विभिन्न प्रांतों से ही नहीं अपितु विदेशों से भी प्रतिवर्ष हजारों नहीं लाखों की संख्या में तीर्थ यात्री और पर्यटक यहाँ आते हैं। नचिकेता ताल भी उन्हीं दिव्य स्थानों में से एक है। यह स्थान उत्तरकाशी से लगभग 29 किलोमीटर के मोटर मार्ग पर समुद्र की सतह से 2310 फुट की ऊँचाई पर स्थित चौरंगी खाल नामक अत्यंत मनोरम पर्वतीय ग्राम जो उत्तरकाशी लम्ब गाँव मोटर मार्ग पर स्थित है, से लगभग 4 किलोमीटर के अत्यंत सरल और मनमोहक पदयात्रा पथ पर धनारी पट्टी के पंचाण और फोल्ड गाँव के मध्य, समुद्र की सतह से 2453 मीटर की ऊँचाई पर बांज, बुरांस, उत्तीस (पॉपुलर) हरू, थुनेर और रास्ते में चीड़, काफल तथा तेजपात (दालचीनी) के गगनचुम्बी वृक्षों से आच्छादित है। पर्यटक और पदयात्री पग—पग पर बिखरे प्रकृति के विस्तीर्ण पटल को आश्चर्य और कौतूहल से भरकर अति उत्साहित होकर एक—एक पग आगे बढ़ाते हुए प्रकृति के मनोरम दृश्य को देखते चलता है। यह ताल लगभग अंडाकार आकृति का है, जो कि उत्तरकाशी और टिहरी जिले की सीमा पर स्थित है। यह ताल लगभग डेढ़ सौ मीटर लंबा और 30 से 40 मीटर चौड़ा तथा संभवत दो—तीन मीटर गहरा बतलाया जाता है। यहाँ प्रतिवर्ष बैसाखी के अवसर पर एक भव्य मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें स्थानीय निवासियों का जनसमूह अत्यंत श्रद्धा और भक्ति के साथ ताल के दर्शन और स्नान करने आता है। सभी लोग ताल में स्थित शैवाल को प्रसाद स्वरूप ले जाते हैं। संभवतः शैवाल को प्रसाद स्वरूप ले जाने की यह परंपरा इसीलिए बनाई गई होगी कि इस बहाने लोग श्रद्धा—भक्तिपूर्वक ताल की सफाई भी कर देंगे और ताल/झील प्रदूषण से मुक्त रहेगा। अनेक लोग ताल में गिरे पत्तों की भी सफाई करते हैं। इस झील/ताल के निकट नाग देवता का एक मंदिर भी है और एक चौंतरा जो टीन शेड से



आच्छादित है पर स्थित धूनी लगातार जलती रहती है। वर्तमान समय में यह ताल / झील अत्यंत प्रदूषित हो चुकी है। शासन को समय रहते इस ताल के संरक्षण और इसकी सफाई की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। अन्यथा यह ताल भी आने वाले समय में अस्तित्वहीन हो जाएगा। वन विभाग द्वारा इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। दिसंबर—जनवरी में यह ताल पूर्ण रूप से बर्फ से आच्छादित हो जाता है। जन साधारण का दृढ़ विश्वास है कि विशिष्ट पर्वों पर इस ताल में देवगण स्नान करने आते हैं। इस ताल में हजारों की संख्या में मछलियाँ जल क्रीड़ा करती रहती हैं। उन्हें आटे की गोलियाँ, रोटी आदि डालने से वह किनारे पर ही आकर उछलने लगती हैं। वर्ष 1979 में जब मैं अपनी दीदी डॉ. निशा जैन के साथ यहाँ आया था, तब यह ताल अपेक्षाकृत अधिक स्वच्छ था और तब इस झील में आज की अपेक्षा कई गुना अधिक जल और मछलियाँ भी थी। उस समय यह झील भी स्वच्छ जल से लबालब भरी थी। लोगों का यह भी विश्वास है कि इस स्थान पर पूजा—उपासना करने से अतिशीघ्र मंत्र सिद्ध हो जाते हैं और मनवांछित कामना पूर्ण होती है। वर्तमान समय में यह ताल अत्यंत दयनीय स्थिति में है। जो लगातार सूखता जा रहा है और इसमें शैवाल, कूड़ा—करकट और पत्तियाँ भरती जा रही हैं। यदि समय रहते इस पर प्रशासन द्वारा ध्यान न दिया गया, उसकी सफाई न की गई, इस ताल को संरक्षित घोषित नहीं किया गया तो आने वाले समय में यह ताल भी पूर्ण रूप से अस्तित्व हीन हो जाएगा इसमें कोई शक नहीं है।

यह यात्रा 02.05.2024 दिन वृहस्पतिवार को श्रीनगर गढ़वाल से प्रारंभ की गई। इस यात्रा दल में हम पाँच सदस्यों ने प्रतिभाग किया। मैं स्वयं डॉ. राजेश कुमार जैन, मेरे मित्र नीरज नैथानी, संजय उनियाल, जय कृष्णा पैन्चूली और सेवा निवृत्त शिक्षक श्री राजेंद्र प्रसाद कपरवाण सम्मिलित थे।



**प्रस्तुति:** डॉ० राजेश कुमार जैन  
श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड



## साक्षात्कार

# अनुपयोगी व बेकाए वस्तुओं से आकर्षक सजावटी वस्तुएं बनाकर पर्यावरण संरक्षण का दृष्टिशक्ति देखें साहिबा नंद्यौरी

कर्णप्रयाग महाविद्यालय की एम.एस—सी की छात्रा कु. साहिबा मंसूरी वेस्ट मैटेरियल से डेकोरेटिव वस्तुएं बनाती हैं। यह वर्तमान में बेस्ट यूज ऑफ वेस्ट मैटेरियल अथवा रि-साइकिल इकोनोमी के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण का उत्तम तरीका है। साहिबा को राज्य सरकार द्वारा संचालित देवभूमि उद्यमिता योजना के स्टार्ट-अप सीड फंड के अंतर्गत ₹75,000 की धनराशि प्राप्त हुई है। कालेज के उद्यमिता विकास के नोडल अधिकारी डा. हरीश बहुगुणा ने साहिबा की इस उपलब्धि और उनकी रचनात्मक सोच पर उनसे बात की। यहाँ प्रस्तुत हैं बातचीत के कुछ प्रमुख अंश....



**प्रश्न—साहिबा आपको वेस्ट मैटेरियल से आकर्षक वस्तुओं को बनाने का विचार कैसे आया?**

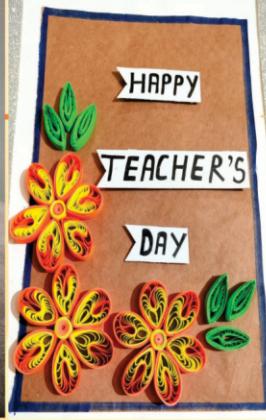
उत्तर—जब मैं कक्षा ग्यारह में थी तो मेरी दोस्त, जो कि बहुत अच्छी पैटिंग करती थी, वह मुख्य समारोहों के अवसर पर प्रधानाचार्य आदि के लिए स्वागत व विदाई पत्र आदि बनाया करती थी। उसको देखकर मैं प्रेरित हुई। उसकी इस प्रकार की कला देखकर मेरे मन में भी एक भाव आया कि मुझे भी यह सब सीखना चाहिए। जब मैं कक्षा बारह में आई तब मुझे अपने अभिभावकों से एक स्मार्ट फोन मिला, जिससे मैं यूट्यूब से साधारण फूल आदि देखकर बनाना सीखने लगी। धीरे-धीरे मुझे नये-नये विचार आने लगे एवं इन विचारों के प्रयोग से मैं क्राफिटिंग करने लगी। मेरी कला को निखारने में निश्चित ही मेरे घर वालों ने एवं अध्यापकों ने प्रोत्साहन दिया। कक्षा बारह के बाद मैंने यश इन्स्टीट्यूट ज्वाइन किया जहां मेरे क्राफ्ट को क्लासमेट एवं अध्यापकों द्वारा सराहना मिलने पर मुझे लगा कि मुझे अपनी क्राफिटिंग स्किल को और अच्छा करना चाहिए।



**प्रश्न—देवभूमि उद्यमिता योजना के अन्तर्गत सीड फंड अवार्ड के लिए आपका नाम पूरे उत्तराखण्ड में 20 विद्यार्थियों के साथ आया है। यह निश्चित ही गर्व की बात है जिसमें आपको 75,000 रु की राशि प्राप्त होनी है। आपकी यह उपलब्धि निश्चित ही इस क्षेत्र के युवाओं को प्रेरित करेगी। आपकी इस उपलब्धि के लिए आपको प्रेरणा कैसे मिली?**

उत्तर—जब मैंने कर्णप्रयाग महाविद्यालय प्रवेश लिया तो यहाँ भी मैं विभिन्न समारोहों के उपलक्ष्य पर कुछ न कुछ क्राफ्ट बनाकर लाती थी, जिसके लिए गुरुजनों से सराहना प्राप्त होती रहती थी। महाविद्यालय के नैक प्रत्यायन से पूर्व प्राचार्य प्रो. कै.ए.ल. तलवाड़ जी ने मेरी प्रतिभा को पहचाना एवं मुझे क्राफ्ट वर्क के लिए प्रोत्साहित किया। गत वर्ष महाविद्यालय में दो-दिवसीय उद्यमिता बूट कैंप में मैंने प्रतिभाग किया। जिसके माध्यम से देवभूमि उद्यमिता योजना के नोडल डा. हरीश बहुगुणा एवं सदस्य मैडम हिना नौटियाल और विजय कुमार सर ने मुझे





योजना के बारे में अवगत कराया। इसी वर्ष मार्च में महाविद्यालय में 12 दिवसीय उद्यमिता विकास प्रोग्राम (ईडीपी) हुआ जिसमें भाग लेकर हमारे कार्यों को देखकर देवभूमि उद्यमिता योजना के मेंटर सुमित सर ने हमें (मेरी बहिन आरजू और मुझे) टीम में मेंटर बनाया। निश्चित ही अध्यापकों और अभिभावकों के सपोर्ट से ही यह सब सम्भव हो सका है।

**प्रश्न—**महाविद्यालय के वर्तमान प्राचार्य प्रो. वी.एन.खाली हैं। महाविद्यालय में जब तुम्हारी प्रतिभा को प्रोत्साहन मिलता है तो कैसा अनुभव होता है?

**उत्तर—** हम दूरस्थ क्षेत्र में स्थित कालेज में पढ़ रहे हैं, जहां विकास की पहुंच अन्य बड़े शहरों जैसी नहीं है। राज्य सरकार द्वारा चलाये जा रहे देवभूमि उद्यमिता योजना जैसे कार्यक्रम निश्चित ही युवाओं की प्रतिभा को सामने लाने का एक प्रशंसनीय प्रयास है। देवभूमि उद्यमिता योजना सीड फंड अवार्ड के लिए मेरा नाम आना मुझे गौरवान्वित करता है। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.वी.एन. खाली सर विद्यार्थियों की रचनात्मकता को

सदैव प्रोत्साहित करते हैं और मैं भी उनमें से एक हूं।

**प्रश्न—**आपको यह जो 75,000 रु की राशि प्राप्त हुई है, इसके सदुपयोग के लिए आपकी क्या प्लानिंग है?

**उत्तर—** यह निश्चित ही मेरे लिए एक अच्छा एवं बड़ा पुरस्कार है। इस राशि का सदुपयोग कर मैं अपनी प्रतिभा को और निखारूंगी एवं अपना एक लघु उद्यम आरम्भ करूंगी। यदि लघु उद्यम के माध्यम से मेरी आय में वृद्धि होगी तो मैं इसे बड़े स्तर तक ले जाने का प्रयास करूंगी।

**प्रश्न—**आप महाविद्यालय एवं स्थानीय युवाओं के लिए क्या संदेश देना चाहती हैं?

**उत्तर—** निश्चित ही महाविद्यालय के एवं स्थानीय युवा प्रतिभा के धनी हैं। आवश्यकता यह है कि उन तक उचित जानकारी पहुंचनी चाहिए एवं युवा भी अपने विकास से सम्बन्धित कार्यक्रमों एवं योजनाओं से अवगत रहें। अतः सभी युवाओं को अपनी प्रतिभा को उजागर करना चाहिए ताकि उनकी प्रतिभा के माध्यम से हो रहे नवाचार से समाज में एक सकारात्मक संदेश जाये।



► डा. हरीश बहुगुणा नोडल अधिकारी  
कौशल एवं उद्यमिता विकास



डा. निशा जैन  
सेवा निवृत्त प्राचार्य,  
राजकीय महाविद्यालय ननौता,  
जिला-सहारनपुर (उ.प्र.)

## हार्दिकं शुभकामनायं

सौभाग्यवश साईं सृजन पटल का प्रवेशांक अगस्त 2024 प्राप्त हुआ। उत्तरकाशी महाविद्यालय में वर्ष 1977 में बीए हिन्दी विषय में मेरे शिष्य रहे, कृष्ण लाल तलवाड़ इसके संपादक हैं। डा. शिवानंद नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग, चमोली से प्राचार्य पद से सेवा निवृत्त होने के पश्चात् डा.के.

एल.तलवाड़ द्वारा अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर समय का सदुपयोग करते हुए युवा पीढ़ी को लेखन के विभिन्न आयामों, क्षेत्रों में प्रशिक्षित करने का प्रयास अत्यंत सराहनीय है। वर्तमान समय में संचार माध्यमों में नित्य नवीन तकनीक के प्रयोग से ज्ञान-विज्ञान के नए क्षेत्रों उद्घाटित हो रहे हैं। इनके समुचित उपयोग से रचनाधर्मिता को अभिव्यक्ति के नए पंख, नई उड़ान प्राप्त हो रही है। आज की युवा पीढ़ी अत्यधिक ऊर्जावान, प्रतिभावान है। उपयुक्त मंच प्राप्त होने पर वह समाज को सार्थक सन्देश प्रदान कर सकती है इस पत्रिका में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों साहित्य, कला, संगीत, लोक

कला, परंपरा को अभिव्यक्ति का समुचित अवसर प्रदान किया गया है। श्री प्रभु जी से मंगल कामना है कि आपका यह प्रयास सतत प्रगतिपथ पर अग्रसर रहते हुए नवीन क्षितिजों का उद्घाटन करे। मैं 'साईं सृजन पटल' मासिक ई-न्यूज लैटर के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल को साधुवाद व हार्दिक शुभकामनाएं प्रदान करती हूं।

शुभम भूयात  
डा. निशा जैन

Tilburg The Netherlands.

# उत्तराखण्ड की पारम्परिक मिठाई-अरसा

आप सभी को मेरा सादर प्रणाम ।

आज हम उत्तराखण्ड की पारंपरिक मिठाई (कल्यो) अरसा बनाना सीखेंगे । उत्तराखण्ड के गांवों में प्रत्येक शुभ कार्य में अरसे बनाए जाते थे । बेटियाँ जब ससुराल जाती थीं तो अरसे की कंडी के साथ ही बेटी को विदा किया जाता था । जी हां मैं 'था' इसलिए कह रही हूँ कि अब मिठाइयों के कई विकल्प हो गए हैं । गांव में अरसे एक दो किलो के नहीं बल्कि 20,30 या 40 किलो से अधिक के बनाए जाते थे । गांव के पुरुषों व महिलाओं की सहभागिता से ही यह संभव होता था । यदि 20 किलो चावल के बनेंगे तो रात भर भिगोये चावलों को ओखली में कूटा जाता था और गुड़ को गलाकर गुड़ का पाक तैयार किया जाता था । बहुत लोगों के द्वारा अरसे की सामग्री तैयार की जाती थी । समय बदला, साधन बदले और अब धीरे-धीरे अन्य मिठाईयों ने अरसे का स्थान ले लिया । फिर भी अरसा नाम सुनते ही मुँह में जो स्वाद आता है उसका अपना ही आनन्द है ।

**सामग्री—** चावल 1 किलो, गुड़ आधा किलो, तेल तलने लायक, सौंफ 50 ग्राम ।

**विधि—** 1 किलो चावल यदि मोटा चावल हो तो बेहतर होता है । रात में भिगो दें । सुबह पानी निथार दें । इसके पश्चात मिक्सी में पीस लें । पिसे हुए चावल के पाउडर को छानकर एक तरफ रख दें । अब गुड़ को एक भगोने में पानी डालकर गला दें । चाशनी के लायक हीं पानी डालें । गुड़ में यदि चाहें तो थोड़ा धी भी डाल सकते हैं । गुड़ की चाशनी बनाते वक्त जांच लें । एक कटोरी पानी में थोड़ा सा चाशनी डालें यदि फैल रही है तो समझ लें कि अभी

चाशनी तैयार नहीं हुई । जब तक चाशनी पानी में ना फैले तब गुड़ को पकाते रहें । इसके पश्चात इस चाशनी को आंच से उतारकर चावल का आटा धीरे-धीरे चाशनी में डालते रहें और साथ-साथ सामग्री को करछी से चलते रहें जिससे गांठ न पड़े । यही प्रक्रिया आटा खत्म होने तक दोहराते रहें जिससे गुड़ का पाक व चावल का आटा एकसार हो जाय और कोई गांठ न पड़े । अब इसमें सौंफ मिला दें । कढ़ाई में तेल गर्म करें और छोटी-छोटी लोई लेकर आप जैसा आकार देना चाहे छाटा बड़ा उसे उंगलियों में हल्का फैलाकर गर्म तेल में छोड़ दें । भूरा या हल्का काला होने तक तलें । अब आपके गरमा-गरम अरसे तैयार हो गए हैं । इसे चाव से खाइये व दूसरों को भी खिलाइये । अरसे को लंबे समय तक रखा जा सकता है । सर्वियों में अरसे बहुत लाभकारी होते हैं क्योंकि इन्हें गुड़ के पाक (चाशनी) में बनाया जाता है ।



◀ प्रस्तुति: डॉ शोभा रावत  
असिस्टेंट प्रोफेसर  
राजकीय महाविद्यालय,  
कल्जीखाल, पौड़ी गढ़वाल

हुनर

## कवीन ऑफ केक्स - शिल्पी कुकरेती

उत्तराखण्ड के देहरादून जिले के जॉलीग्रांट की निवासी शिल्पी ने जिस तरह से जीवन के कठिन दौर में भी आत्मविश्वास नहीं खोया और अपने नए सपनों को साकार किया, वह हर किसी के लिए सीखने योग्य है । शिल्पी ने 2017 में बी.एससी. नर्सिंग किया और कैंसर अनुसंधान संस्थान, हिमालयन अस्पताल में एक पंजीकृत नर्स के रूप में कार्य किया । मगर, जीवन में आने वाली कठिनाइयाँ किसे नहीं मिलतीं? शिल्पी को भी एक ऑटोइम्यून डिसऑर्डर, एसएलई (सिस्टमिक ल्यूपस एरिथ्रैमोटोसस) का सामना करना पड़ा, जिसके कारण उन्होंने कोविड-19 महामारी के दौरान अपनी नौकरी छोड़नी पड़ी । यह वह समय था जब कई लोग निराश हो जाते, परंतु शिल्पी ने अपनी राह स्वयं बनाई । नौकरी छोड़ने के बाद, उन्होंने हार मानने के बजाय होम बेकिंग में अपना करियर बनाने का साहस किया ।



यूट्यूब से बेकिंग सीखकर उन्होंने केक और कपकेक के ऑर्डर लेना शुरू किया । उनकी कड़ी मेहनत और जुनून का परिणाम यह है कि इस वर्ष 3 जून को उन्होंने 'स्वीटस्पॉट बाय शिल्पी' नाम से अपना बेकरी आउटलेट शुरू किया, जो जॉलीग्रांट में स्थापित है । शिल्पी की कहानी केवल बेकरी तक सीमित नहीं है । उन्होंने नृत्य और जुम्बा में भी अपनी रुचि को पेशे में बदल दिया है और पिछले पाँच वर्षों से यह कला सिखा रही हैं । इसके अलावा, उनका एक ऑनलाइन क्राफ्ट स्टोर भी है, जहाँ वह अनुपयोगी चीजों से नए उपयोगी उत्पाद बनाकर युवाओं को आकर्षित कर रही हैं ।





## प्रतिभा

# पोट्रे बनाने में महारत हासिल है चित्रकार छात्र अजय कुमार को



राष्ट्रीय सभ्यता ▶ हिन्दी दैनिक ▶

दिनांक : 04 सितम्बर 2024

## शिक्षक दिवस पर विशेष: गुरु-शिष्य की अद्वितीय जोड़ी की प्रेरक कहानी

राष्ट्रीय सभ्यता रिपोर्टर  
उत्तराखण्ड। शिक्षक और शिष्य का संबंध भारतीय संस्कृति में सदियों से अद्वितीय स्थान रखता आया है। गुरु और शिष्य के संबंध को केवल एक शोषणीय प्रक्रिया तक सीमित नहीं रखा जा सकता; यह एक ऐसा परिव्रत्र बनें हो जो व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाता है और राष्ट्र निर्माण की दिशा में अग्रसर करता है। ऐसी ही एक प्रेणादारी कहानी है कण्ठप्रयाग पीजी कॉलेज के संसानिवृत्त प्राचार्य डॉ. के. एल. तलवाड़ और उनके प्रसन्न शिष्य अकित तिवारी की, जिनका नाता शिक्षा और सुजन के नए अंकार्य लिख रहा है।

डॉ. तलवाड़, जो शिक्षा के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए विख्यात है, ने अपने कार्यकाल के दौरान न केवल विद्यार्थियों की शिक्षित किया, बल्कि उन्हें जीवन की वास्तविकाओं से लूपक कराते हुए सुजनाभक्ता की ओर भी प्रेरित किया। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं है, बल्कि छात्रों के भीतर इन्हीं हुई संवादात्मकों को

निखारना है। यही कारण है कि उन्होंने डॉइवाला महाविद्यालय में समावायर लेखन कला का नि-शुल्क प्रशिक्षण शुरू किया।

प्रोफेसर तलवाड़ के मार्गदर्शन में जब यह प्रशिक्षण आरंभ हुआ, तो अकित तिवारी का नाम सर्वथेष्ठ छात्र प्रतिभागी के रूप में सामने आया था। लेखन को जीवनी रूपि और समर्पण ने उन्हें न्यूज़ लैटर 'दर्पण' के छात्र संपादक के रूप में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सीधी। यह नियुक्ति केवल एक पद थी, बल्कि एक नई यात्रा की शुरुआत थी जो अकित के जीवन को दिशा देने वाली थी।

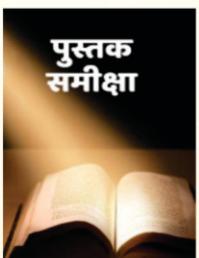
समय के साथ, गुरु-शिष्य का यह कंपन और मजबूत होती चला गया। जब डॉ. तलवाड़ बकरारात कॉलेज के प्राचार्य बने, तो उन्होंने इस रिश्ते को और भी मजबूती से नियामा। कोरोना महावारी के दौरान, जब शिक्षा की प्रणाली बदली हुई, तब डॉ. तलवाड़ ने हस्तालिखित नोट्स लैयर विए और उन्हें जीवन के हर पहलू में तक पहुंचाने का बीड़ा उठाया। यह

कार्य उनकी शिक्षा के प्रति निष्ठा और छात्रों के प्रति उनकी जिम्मेदारी को दर्शाता है।

डॉ. तलवाड़ के सेवानिवृत्त दोने के बाद, उन्होंने अपने शिष्य अकित के साथ मिलकर साईं सुजन पटल की स्थापना की। इस पटल का उद्देश्य युवाओं को लेखन, रिपोर्ट, प्रेस पोटोशाफ़ी, पीवर लेखन और अभिलेखों के रस्तराखाल जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षित करना है। यह एक ऐसा भव जो युवाओं को उनकी सुजनात्मकता को उत्पादने का अवसर प्रदान करता है, और उनके लेखन कौशल को नियारने के लिए व्यावहारिक अनुभव उपलब्ध कराता है। अकित तिवारी को इस पटल में सक्रिय सदस्य और ई-प्यूज़ लैटर के उप-संपादक के रूप में नियुक्त किया गया। यह नियुक्ति अकित के लेखन और सुजनात्मकता के समर्पण की दरावी है, और यह भी प्रमाणित करती है कि एक सच्चे गुरु का मार्गदर्शन शिष्य को केवल शिक्षा नहीं, बल्कि जीवन के हर पहलू में मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।



नया ट्रॉफीकोण और नए आयाम प्रदान करती है। साईं सुजन पटल इस बात का प्रमाण है कि सही मार्गदर्शन और प्रेरणा दो किसी भी युवा का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है और यह समाज के लिए एक प्रेरणास्त्रीत बन सकता है। शिक्षक दिवस पर, डॉ. तलवाड़ और अकित तिवारी की यह कहानी हमें यह सिलाई है कि शिक्षक और शिष्य की बीच का बंधन किसी भी समाज का आदान-प्रदान नहीं होता है। यह कंपन शिक्षा के दृष्टिकोण से एक युग का निर्माण है, जिसमें शिक्षक एक युग निर्माण की भूमिका निभाते हैं, और यह भी प्रमाणित करती है कि एक सच्चे गुरु का मार्गदर्शन शिष्य को केवल शिक्षा नहीं, बल्कि जीवन के हर पहलू में मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है, जो जीवन को छुए।



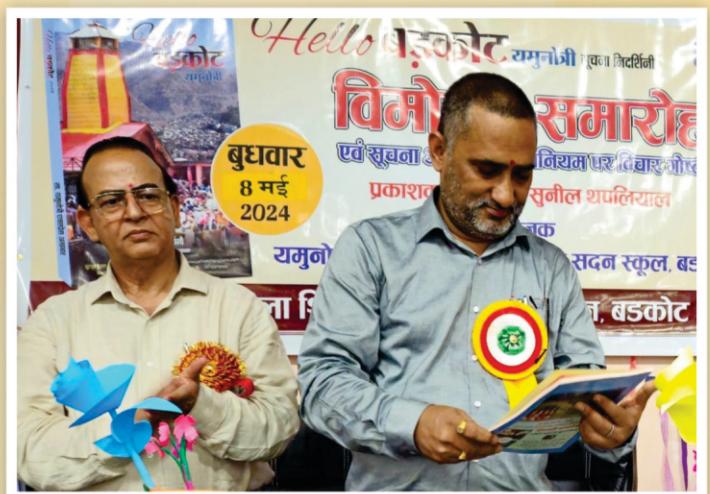
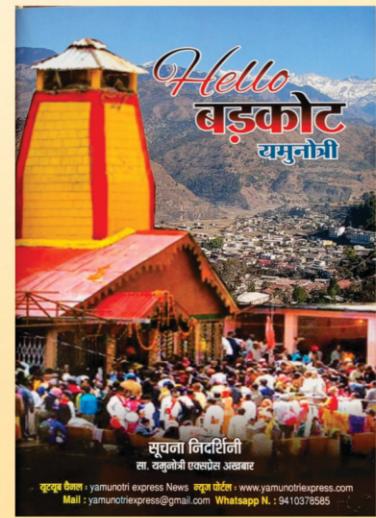
# ‘हेलो बड़कोट-यमुनोत्री’

निर्दर्शनी में संकलित जानकारियों से  
लाभान्वित हो रहे हैं तीर्थ यात्री और पर्यटक



यमुनोत्री एक्सप्रेस न्यूज पोर्टल और यूट्यूब चैनल के संयोजक और उत्तराखण्ड के एक जुङ्गारु युवा पत्रकार सुनील थपलियाल की पहल से ‘हेलो बड़कोट यमुनोत्री’ सूचना निर्दर्शनी तैयार की गई। आठ मई को डायट बड़कोट के सभागार में उत्तराखण्ड सूचना आयुक्त श्री योगेश भट्ट के हाथों एक समारोह में सूचना निर्दर्शनी का विमोचन हुआ। चारधाम यात्रा प्रारंभ होने से ठीक दो दिन पहले इस पत्रिका के प्रकाशन ने इसकी उपयोगिता को और अधिक बढ़ा दिया। माननीय राज्यपाल, मुख्यमंत्री, जिला पंचायत अध्यक्ष, विधायकगण, ब्लाक प्रमुख एवं जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक आदि ने अपने संदेश इस सराहनीय प्रयास के लिए प्रेषित किये। पत्रिका को यमुनोत्री तीर्थ यात्रा से जुड़े हर व्यक्ति ने हाथों-हाथ लिया। पत्रिका के संपादक सुनील थपलियाल के अनुसार संपादक मंडल (प्रो.के.एल.तलवाड़, श्री दिनेश शास्त्री, श्री शशिमोहन ‘रंवाल्टा’ व इं. आशीष सेमवाल) का पूरा प्रयास रहा कि यह पुस्तिका यमुनोत्री धाम आने वाले श्रद्धालुओं का उचित मार्गदर्शन कर सके। पुस्तिका में जहां एक ओर तहसील व नगर पालिका से प्रमाण पत्रों की प्राप्ति के लिए आवश्यक दस्तावेजों की जानकारी दी गई है, वहीं दूसरी ओर प्रशासनिक अधिकारियों का विवरण भी उपलब्ध करवाया गया है। प्रांतीय उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल यमुना घाटी के नाम व दूरभाष नवंर भी इसमें संकलित हैं। सूचना निर्दर्शनी के वरिष्ठ संपादन सहयोगी प्रो.के.एल.तलवाड़ का मानना

है कि यह पुस्तिका अपने आप में यमुना घाटी की सांस्कृतिक विरासत और धार्मिक पर्यटन का एक प्रामाणिक दस्तावेज भी है। सरनौल, बड़कोट, नौगांव, पुरोला, लाखामंडल व हनोल आदि क्षेत्रों के मंदिरों व ऐतिहासिक स्थलों की विस्तृत व सचित्र जानकारी भी इसमें उपलब्ध करवाई गई है, साथ ही पर्यटकों और तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए यात्रा मार्ग पर पड़ने वाले होटल, रेस्टोरेंट व होम स्टे की विस्तृत जानकारी भी उपलब्ध करवाई गई है। इस तरह की पुस्तिका का इतने अल्पसमय में प्रकाशन एक दुरुह कार्य था किन्तु सुनील थपलियाल की



दृढ़इच्छाशक्ति ने इसे मूर्त रूप दे ही दिया। विमोचन के समय सूचना आयुक्त श्री योगेश भट्ट जी ने कहा था कि यह एक अद्भुत प्रयास है और इस पुस्तिका का प्रकाशन प्रत्येक वर्ष नवीनतम जानकारियों के साथ निरंतर होना चाहिए। अंत में कहना न होगा कि इस पुस्तिका में समावेशित जानकारी इसे संग्रहणीय बनाती है साथ ही यह यमुनोत्री धाम की यात्रा को सहज और सुगम बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

प्रस्तुति: प्रो.के.एल.तलवाड़